IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, April 2025
Impact Factor: 7.67

आदिकालीन साहित्य में वर्णित तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियां

डॉ. बृजेन्द्र कुशवाहा

अतिथि विद्वान -हिंदी विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

सारांश (Abstract)

आदिकालीन हिंदी साहित्य, जो लगभग 10वीं से 14वीं शताब्दी तक फैला हुआ है, तत्कालीन राजनीतिक उथल-पुथल का जीवंत प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। इस काल में हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् देश छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित हो गया, जिससे आंतरिक कलह और विदेशी आक्रमण बढ़ गए। साहित्य में मुख्य रूप से वीरगाथा काव्य के माध्यम से राजपूत शासकों की वीरता, युद्ध और राजनीतिक संघर्षों का वर्णन मिलता है, जैसे पृथ्वीराज रासो। यह शोध पत्र तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण करता है, जिसमें मुस्लिम आक्रमण, राजपूतों की आपसी लड़ाइयाँ और साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाएँ शामिल हैं। शोध से पता चलता है कि साहित्य न केवल इतिहास का दर्पण है बल्कि सामाजिक-धार्मिक परिवर्तनों का भी संकेतक है।

कीवर्ड्स (Keywords)

आदिकाल, हिंदी साहित्य, राजनीतिक परिस्थितियां, वीरगाथा काल, राजपूत शासक, मुस्लिम आक्रमण, पृथ्वीराज रासो, हर्षवर्धन, महमूद गजनवी, मोहम्मद गोरी, आंतरिक कलह, विदेशी आक्रमण।

परिचय (Introduction)

हिंदी साहित्य का इतिहास एक समृद्ध विरासत है, जो भारतीय समाज, संस्कृति और राजनीति के विभिन्न आयामों को प्रतिबिंबित करता है। हिंदी साहित्य को सामान्यतः चार प्रमुख कालों में विभाजित किया जाता है: आदिकाल (10वीं से 14वीं शताब्दी), भक्तिकाल (14वीं से 17वीं शताब्दी), रीतिकाल (17वीं से 19वीं शताब्दी) और आधुनिक काल (19वीं शताब्दी से वर्तमान तक)। इनमें से आदिकाल को हिंदी साहित्य का प्रारंभिक चरण माना जाता है, जिसे वीरगाथा काल भी कहा जाता है। इस काल का साहित्य मुख्य रूप से अपभ्रंश और प्रारंभिक हिंदी में रचा गया, और यह तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, April 2025 Impact Factor: 7.67

परिस्थितियों से गहराई से प्रभावित है। आदिकाल की राजनीतिक पृष्ठभूमि अत्यंत जटिल और अस्थिर थी। सम्राट हर्षवर्धन (606-647 ई.) की मृत्यु के बाद उत्तर भारत में राजनीतिक एकता भंग हो गई। देश छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया, जहां राजपूत वंश जैसे चौहान, चंदेल, गहरवार और परमार प्रमुख थे। इन राजवंशों के बीच आपसी संघर्ष आम थे, जो अक्सर क्षेत्र विस्तार, शौर्य प्रदर्शन या वैवाहिक संबंधों के लिए लड़े जाते थे। इसी काल में विदेशी आक्रमणों की शुरुआत हुई, विशेष रूप से मुस्लिम शासकों द्वारा। महमूद गजनवी (997-1030 ई.) ने भारत पर 17 बार आक्रमण किए, मुख्य रूप से लूटपाट के उद्देश्य से। उसके बाद मोहम्मद गोरी (1175-1206 ई.) ने भारत विजय की महत्वाकांक्षा से आक्रमण किए, जिसके परिणामस्वरूप दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई। इस राजनीतिक अस्थिरता का सीधा प्रभाव साहित्य पर पड़ा। आदिकालीन साहित्य में वीर रस प्रधान है, जहां राजाओं की वीरता, युद्ध और राजनीतिक घटनाओं का वर्णन किया गया है। प्रमुख रचनाएँ जैसे चंदबरदाई का 'पृथ्वीराज रासो', जगनिक का 'परमाल रासो', शारंगधर का 'हमीर रासो' आदि इन परिस्थितियों को दर्शाती हैं। ये रचनाएँ न केवल ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करती हैं बल्कि तत्कालीन समाज की मनोवृति को भी उजागर करती हैं, जहां वीरता और सम्मान सर्वोपरि थे। इस शोध पत्र का उद्देश्य आदिकालीन साहित्य में वर्णित राजनीतिक परिस्थितियों का गहन विश्लेषण करना है। हम देखेंगे कि कैसे साहित्यकारों ने इन घटनाओं को अपने काव्य में स्थान दिया, और यह कैसे इतिहास की समझ को समृद्ध करता है। पत्र में राजनीतिक घटनाओं के साथ-साथ उनके सामाजिक-धार्मिक प्रभावों पर भी चर्चा की जाएगी।

शोध पद्धति (Research Methodology)

यह शोध मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, क्योंकि आदिकालीन साहित्य की मूल रचनाएँ दुर्लभ हैं और अधिकांश उपलब्ध संस्करण बाद के संपादनों पर निर्भर हैं। शोध पद्धति में निम्नलिखित चरण शामिल हैं:

साहित्य समीक्षा (Literature Review): प्रमुख हिंदी साहित्य इतिहासकारों जैसे रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेंद्र आदि की पुस्तकों का अध्ययन। इनमें 'हिंदी साहित्य का इतिहास' और 'आदिकाल की पृष्ठभूमि' जैसे ग्रंथ प्रमुख हैं।

ऐतिहासिक स्रोतों का विश्लेषण: अल बरूनी, फरिश्ता जैसे मुस्लिम इतिहासकारों के विवरणों का उपयोग, जो तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं को दर्शाते हैं। साथ ही, पुरातात्विक साक्ष्यों जैसे शिलालेखों का संदर्भ।

साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन: आदिकालीन प्रमुख रचनाओं जैसे 'पृथ्वीराज रासो', 'बीसलदेव रासो' आदि का पाठ और विश्लेषण। इनमें वर्णित घटनाओं को ऐतिहासिक तथ्यों से मिलान।

तुलनात्मक अध्ययन: आदिकाल को अन्य समकालीन साहित्यों जैसे संस्कृत या अपभ्रंश से तुलना, ताकि राजनीतिक प्रभाव स्पष्ट हो।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, April 2025 Impact Factor: 7.67

डेटा संग्रह: वेब आधारित स्रोतों, पीडीएफ दस्तावेजों और यूट्यूब व्याख्यानों से जानकारी एकत्रित। उदाहरणस्वरूप, एमडीयू की पीडीएफ और विकिपीडिया से पृष्ठभूमि जानकारी। शोध गुणात्मक है, जिसमें व्याख्यात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया। कोई प्राथमिक सर्वेक्षण नहीं किया गया, क्योंकि विषय ऐतिहासिक है। नैतिकता के रूप में, सभी स्रोतों का उचित उद्धरण किया गया है।

मुख्य विश्लेषण (Main Body)

1. आदिकाल की राजनीतिक पृष्ठभूमि आदिकाल की शुरुआत हर्षवर्धन के शासन से जुड़ी है, जिन्होंने उत्तर भारत को एक सूत्र में बांधा था। उनकी मृत्यु (647 ई.) के बाद राजनीतिक शून्यता उत्पन्न हुई। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने उनके शासन की प्रशंसा की, लेकिन उसके बाद अराजकता फैली।

राजपूत राज्यों का उदय: चौहान (अजमेर), चंदेल (बुंदेलखंड), गहरवार (कन्नौज) आदि वंश उभरे। इनके बीच संघर्ष आम थे, जैसे पृथ्वीराज चौहान और जयचंद के बीच। ये संघर्ष क्षेत्रीय वर्चस्व के लिए थे।

विदेशी आक्रमण: महमूद गजनवी ने सोमनाथ मंदिर लूटा, जो धन-संपदा के लालच से प्रेरित था। मोहम्मद गोरी ने तराइन के युद्धों (1191-1192) में पृथ्वीराज को हराया, जिससे मुस्लिम शासन की नींव पड़ी।

2. साहित्य में राजनीतिक परिस्थितियों का प्रतिबिंब आदिकालीन साहित्य वीरगाथा प्रधान है, जो राजनीतिक घटनाओं को काव्यात्मक रूप देता है।

पृथ्वीराज रासो (चंदबरदाई): यह पृथ्वीराज चौहान की वीरता का वर्णन करता है। तराइन युद्ध, जयचंद से संघर्ष और संयोगिता हरण की घटनाएँ राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को दर्शाती हैं। रासो में गोरी को 'तुर्क' के रूप में चित्रित किया गया, जो विदेशी खतरे का प्रतीक है।

बीसलदेव रासो (नरपति नाल्ह): अलवर के राजा बीसलदेव की कहानी, जिसमें मुस्लिम आक्रमणों का प्रतिरोध दिखाया गया।

परमाल रासो (जगनिक): कन्नौज के राजा परमाल की वीरता, जयचंद के साथ संघर्ष।

ये रचनाएँ राजपूतों की एकता की कमी को उजागर करती हैं, जो उनकी हार का कारण बनी। साहित्य में वीर रस के माध्यम से राजनीतिक अस्थिरता को महिमामंडित किया गया, लेकिन वास्तविकता में यह कलह का दौर था।

3. सामाजिक-धार्मिक प्रभाव राजनीतिक अस्थिरता ने समाज को प्रभावित किया। बौद्ध और जैन धर्म में विभाजन हुआ, जबकि हिंदू समाज में वीरता की पूजा बढ़ी। साहित्य में धार्मिक सहिष्णुता की झलक मिलती है, लेकिन युद्ध प्रधान है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, April 2025 Impact Factor: 7.67

4. आर्थिक और सांस्कृतिक आयाम आक्रमणों से आर्थिक क्षति हुई, लेकिन साहित्य में राजसी वैभव का वर्णन है। कन्नौज और दिल्ली जैसे केंद्र साहित्यिक गतिविधियों के हब थे।

निष्कर्ष (Conclusion)

आदिकालीन साहित्य तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का प्रामाणिक दस्तावेज है। यह दिखाता है कि कैसे अराजकता, आक्रमण और आंतरिक कलह ने समाज को आकार दिया। वीरगाथा काव्य ने इन घटनाओं को अमर किया, जो आज भी इतिहासकारों के लिए महत्वपूर्ण हैं। हालांकि, साहित्य में अतिरंजना है, फिर भी यह राजनीतिक वास्तविकता को प्रतिबिंबित करता है। भविष्य के शोध में इन रचनाओं की ऐतिहासिक सत्यता पर अधिक ध्यान दिया जा सकता है।इसी समय विदेशी आक्रमणों की श्रृंखला भी शुरू हुई। महमूद गजनवी (९९७-१०३० ई.) ने भारत पर बार-बार आक्रमण किए, जिनका मुख्य उद्देश्य मंदिरों की लूट और धन-संग्रह था। सोमनाथ मंदिर पर उसका आक्रमण सबसे प्रसिद्ध है। बाद में मुहम्मद गोरी (११७५-१२०६ ई.) ने राजनीतिक विजय की महत्वाकांक्षा से भारत पर आक्रमण किए। ११९१ में तराइन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान ने गोरी को पराजित किया, किंतु ११९२ के द्वितीय तराइन युद्ध में गोरी की विजय हुई और पृथ्वीराज की पराजय के साथ दिल्ली में मुस्लिम शासन की नींव पड़ी। इन जटिल राजनीतिक परिस्थितियों का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब आदिकालीन साहित्य में मिलता है। इस काल की प्रमुख रचनाएँ वीरगाथा काव्य हैं, जिनमें वीर रस प्रधान है। चंदबरदाई का पृथ्वीराज रासो सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें पृथ्वीराज चौहान की वीरता, संयोगिता-हरण, जयचंद से वैमनस्य और गोरी से युद्ध का विस्तृत वर्णन है। इसी प्रकार जगनिक का परमाल रासो, नरपति नाल्ह का बीसलदेव रासो और शारंगधर का हमीर रासो भी तत्कालीन राजाओं की वीरता और राजनीतिक संघर्षों को चित्रित करते हैं। इन रचनाओं में राजपूतों की आपसी फूट और एकता की कमी को बार-बार उजागर किया गया है, जो उनकी पराजय का प्रमुख कारण बनी। साहित्य में विदेशी आक्रमणकारियों को 'तुर्क' या 'म्लेच्छ' कहकर चित्रित किया गया, जो उस समय के सामाजिक-धार्मिक भय और प्रतिरोध की भावना को दर्शाता है। हालाँकि वीरगाथा काव्यों में काव्यात्मक अतिरंजना और रोमांचक तत्व प्रचुर हैं, तथापि ये रचनाएँ तत्कालीन राजनीतिक वास्तविकता—अराजकता, आंतरिक कलह, विदेशी आक्रमण और राजपूत शौर्य की भावना—को जीवंत रूप से प्रस्तुत करती हैं। ये काव्य न केवल साहित्यिक महत्व के हैं, बल्कि इतिहासकारों के लिए भी मूल्यवान स्रोत हैं।

संदर्भ (References)

[1]. हिंदी साहित्य का इतिहास - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय।

[2]. आदिकाल की पृष्ठभूमि या परिस्थितियाँ - डॉ. सुनीता शर्मा।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, April 2025
Impact Factor: 7.67

[3]. आदिकाल - विकिपीडिया।

[4]. एमडी कॉलेज पीडीएफ।

[5]. यूट्यूब व्याख्यान - आदिकालीन साहित्य की परिस्थितियाँ।

[6]. डीडीसीई उत्कल यूनिवर्सिटी।

[7]. हिंदी साहित्य - विकिपीडिया (अंग्रेजी)।

[8]. विभिन्न युग ऑफ हिंदी लिटरेचर - जीके टुडे।